Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

'आओ पेपें घर चलें' उपन्यास में वर्णित नारी मन की अंर्तव्यथा

Babita*

M.A. (Hindi) NET JRF, Hisar

शोध सारः- *'आओ पेपें घर चलें' प्रभा खेतान का पहला व श्रेष्ठ उपन्यास है। जिसमें उन्होने स्त्री जाति की मानसिक यंत्रणा, वेदना को उचित रूप से अभिव्यक्त किया है। तलाक, प्रेम, विवाहेतर सम्बन्ध जैसी समस्याओं को इस उपन्यास में सफलता के साथ उकेरा गया है। प्रभा जी ने पीड़ाओं को सहकर जीने के लिए मजबुर बन गई स्त्री पात्रों के मानसिक द्वन्द्व, कुन्ठा तथा भय को अपने उपन्यास में बेहद ही संजीव रूप से प्रस्तुत किया। उपन्यास में मरील, प्रभा, एलिजा, आइलिन, कैथी, क्लारा ब्राउन, कैथी आदि स्त्री पात्रों के जीवन अंकन के द्वारा प्रभा जी ने आज की स्त्री को वैश्विक धरातल पर अंकित किया। 'आओ पेपें घर चलें' की सभी नारी पात्र किसी ना किसी मानसिक तनाव से ग्रस्त हैं। इनमें से कोई पात्र तो विवाह विच्छेद होने पर बौखलाया हुआ है तो कोई पात्र अपने दाम्पत्य जीवन को बचाने की कोशिश में लगा है। अन्य पात्रों में कहीं आत्मनिर्भर बनने का प्रश्न है तो कहीं शान-औ-शौकत का जीवन जीने की लालसा है। कुल मिलाकर यह उपन्यास नारियों के मन की अंतव्यथा को चित्रित करने में पूर्णतः सफल हुआ है।*

मुख्य शब्दः- *पृष्ठभूमि, विवाहेतर, थेरापी, साईकियाट्रिस्ट अंतर्विरोध, वहशीपन, वैश्विक, वर्चस्व।*

----------X----------

प्रभा खेतान को हिन्दी भाषा की लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार व प्रतिभाशाली कवयित्री के तौर पर जाना जाता है। एक समाज सेविका के रूप उन्होने अपने जीवन में सक्रिय रूप से कार्य किए। वे केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की सदस्या थी। प्रभा खेतान को स्त्रीवादी चितंक बनने तथा स्त्री चेतना के कार्यो में भागीदारी करने का गौरव प्राप्त हुआ। सन् 1990 ई0 में प्रकाशित 'आओ पेपें घर चलें' उपन्यास इनका पहला व श्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है जो विदेशी पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। प्रभा जी जब ब्यूटी थेरापी का कोर्स करने अमेरिका गई तब उन्होने वहां जो अनुभव प्राप्त किए, उन्हे इस उपन्यास के रूप में प्रस्तुत किया। प्रभा जी का यह उपन्यास नारी जीवने में अनेक समस्याओं से उत्पन्न अन्तव्यथा को दर्शाता है। किस प्रकार आज की नारी चाहे किसी भी देश की क्यूं ना हो, अनेक पीड़ाओं व समस्याओं से गुजर रही है जो उसे अंदर ही अंदर कुंठित किये जा रही है। आज की नारी तलाक, प्रेम सम्बन्धों तथा विवाहेतर सम्बन्ध जैसी समस्याओं से अकेले ही जूझ रही है। 'आओ पेपें घर चलें' उपन्यास में पीड़ाओं को सहन करती हुई नारी जीवन की सच्ची तस्वीर को प्रस्तुत किया गया है। प्रभा खेतान ने अपने इस उपन्यास में अमेरिका के तीन शहरों सेंट लुईस, लॉस एंजिल्स और न्यूयार्क में रहते हुए अपने अनुभवों के आधार पर नारी जीवन की अंतव्यथा को दर्शाया। प्रभा खेतान जी के बारे में राजेन्द्र यादव जी ने लिखा है कि "उसने अपने विदेश अनुभवों को आधार बनाकर, 'आओ पेपें घर चलें' लम्बी कहानी या लघु उपन्यास लिखा।"1

अंर्तव्यथा का अर्थः-

अंर्तव्यथा का अर्थ है हृदय की वेदना या मानसिक पीड़ा। अन्तव्यथा की अभिव्यक्ति प्रभा खेतान ने इस उपन्यास में बहुत ही प्रभावशाली तरीके से की है। यह अंर्तव्यथा या मानसिक पीड़ा किसी ना किसी समस्या का ही परिणाम है। जब मनुष्य का हृदय किसी ऐसी वेदना या चिंता से भर जाता है कि वह चाह कर भी स्ंवय को उससे दूर ना कर पाए तो वह आंतरिक रूप से कुंठित महसूस करता है। ये कुंठा मनुष्य के जीवन में आने वाली समस्याओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई तनाव, चिंता या परेशानी के कारण होती है।

मरील, आइलिन, प्रभा, क्लारा ब्राउन, कैथी, लारा तथा एंलिजा आदि स्त्री पात्रों की मानसिक वेदना को इस उपन्यास में प्रमुखता से उबारा गया है। मरील नामक स्त्री की मानसिक स्थिति को यहां स्पष्ट किया गया है। वह एक चालीस साल

www.ignited.in

की तलाकशुदा महिला है। जिसका पति एक बीस वर्ष की लड़की के साथ भाग जाता है। मरील उसके खिलाफ कोर्ट जाती है तो वह उसे हजार डॉलर पर महीने के हिसाब से देने को राजी होता है। "भाग गया साला, किसी बीस बरस की लडकी को लेकर, कोर्ट का दरवाजा खटखटाने पर आजकल हजार डॉलर भेजता है, बास्टर्ड।"2

मरील एक लालची नारी है। वह ऊंची महत्वाकांक्षा रखती है और अपने सपने सच करने के लिए मेहनत भी करती है। मरीय की दो बेटियां है, जिनमें वह लगाव नही रखती। उसके तथा उसकी बेटियों के मध्य हमेशा तनाव बना रहता है। यह तनाव मरील व उसके पति तलाक के कारण उत्पन्न होता है। हमारे समाज में आजकल इस प्रकार की परिस्थितियां आम हो गई हैं। जब माता-पिता के बीच का द्वन्द्व उनके बच्चों पर बुरा प्रभाव डालता है। मरीय की बेटियां उसे बदचलन मानती है कि उसकी मां की वजह से उसके पापा उन्हे छोड़कर चले गए। दोनों बच्चियां इसी मानसिक पीड़ा से गुजर रही हैं। "डैड क्यों चले गए, यह सबको पता है। मम्मा कभी एक पुरूष के साथ सालभर भी नही गुजार सकती, फिर भी शादी का ढ़ोंग क्यों?"3

मां बाप के बीच की टकराहट या उनका अलगाव बच्चों के जीवन पर दुष्प्रभाव डालता है। एक स्थान पर लेखिका मरील से कहती भी है "तुम मियां बीवी के अहम की टकराहट में बेचारी लारा पिस जाएगी।"4

लेखिका प्रभा खेतान की स्वानूभूतियों का दर्शन भी 'आओ पेपें घर चलें' में किया गया है। उनके जन्म पर उनके मारवाड़ी परिवार में खुशी का माहौल नही था। प्रभा जी ने भी विवाहित डाक्टर सर्राफ से प्यार हो जाने के कारण अविवाहित रहने का निर्णय लिया। उनका जीवन भी अनेक दुखों और पीड़ाओं से भरा रहा। नौ साल की आयु में पिता की मृत्यु ने उन्हे अन्दर से तोड़ के रख दिया। ब्यूटी थेरापी का कोर्स करने के लिए वे अमेरिका चली गई और अपने अनुभवों को इस उपन्यास रूपी माला में पिरोने की अच्छी कोशिश की। एक अन्य नारी पात्र आइलिन के द्वारा भी उन्होने जीवन की सत्यता को प्रस्तुत किया। सत्तर वर्षीय आइलिन अपने दो पतियों और पाँच प्रेमियों की याद में जी रही है। वह बूढ़ी होकर भी रोजर नामक युवक से प्यार करती है। वह कभी भी प्यार को छोड़ने को तैयार नही होती। अपनी मानसिक स्थिति को वह प्रभा के सामने व्यक्त करती है। "मैं पहले पति का चेहरा हर पुरूष में खोजती रहती हूँ। किसी में उसकी आवाज पाती हूँ, कहीं उसकी दृष्टि, कहीं उसका स्पर्श। कोई बिल्कुल उस जैसा लगता है।"5

आइलिन नामक यह बूढ़ी औरत भी मानसिक वेदना की शिकार है। कहीं ना कहीं अपनी अतृप्त इच्छाओं की तृप्ति के लिए वह पुरूषों को तलासती रहती है। वह अपने कुत्ते पेपें के साथ रहती है तथा उसी के सामने अपने दिल की भावनाओं को अभिव्यक्त करती है। आइलिन के माध्यम से औरत के अकेलेपन की स्थिति तथा भोग विलास में डूबी विदेशी औरतों का बखूबी चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। प्रभा अमेरिका में आइलिन के साथ रहती है। आइलिन अपने मन के भावों को प्रभा के सामने अभिव्यक्त करती है। "औरत कहां नही रोती और कब नही रोती। वह जितना भी रोती है, उतनी ही औरत हो जाती है।"6

एलिजा नामक एक नारी पात्र भी प्रेम त्रिकोण के कारण अंदर ही अंदर घुटती जाती है। उसका दाम्पत्य जीवन उसके पति की प्रेमिका क्लारा ब्राउन की वजह से टूट रहा है। उसका पति जार्ज उसके साथ रहता है। यह वो कदापि सहन नही कर सकती। वह जार्ज से तलाक भी नही लेना चाहती। वह प्रभा से कहती है " तब मैं क्या करूं प्रभा? मैं क्लारा ब्राउन नही हो सकती और जार्ज को छोड़ भी नही सकती। मैं उससे प्यार करती हूँ। बेहद.....अपने से ज्यादा।"7

वह अपने पति के विवाहेतर संबन्ध के कारण कुंठा की शिकार हो जाती है। वह अपने दुख को अपनी मां के सामने व्यक्त करती है। लेकिन मां के ना रहने पर वह एक साईकियाट्रिस्ट के पास जाती है। "अब रोने के लिए हर सीटिंग में डेढ़ सौ डॉलर खर्च करने होगें.....इस बात को मैं किससे कह सकती हूँ। सिवाय इसके कि सप्ताह में एक दिन साइकियाट्रिस्ट के पास जाऊं और कोच पर लेटी- लेटी जो मन में आए करती रहूं और एक घंटे का सेशन पूरा होने लौट जाऊं।"8

इसी मानसिक तनाव के चलते वह आत्महत्या की असफल कोशिश करती है और अन्त में तलाक पर दस्तख़त करने के लिए मजबूर हो जाती है।

"आओ पेपें घर चलें" उपन्यास में नारी जीवन से संबन्धी अनेक समस्याओं को बखूबी दर्शाया गया है। यौन शोषण एक ऐसा घिनौना अपराध है जिसमें शोषण का शिकार स्त्री अपना सारा जीवन मानसिक यंत्रणा और बाधाओं में गुजारने पर विवश हो जाती है। अपनी हवस को मिटाने के लिए जब एक पुरूष वहशीपन पर उतर जाता है तो वह स्त्री के जीवन व उसके शरीर दोनों को कंलकित कर देता है। इस उपन्यास के एक प्रसंग में एक नारी पात्रा कैथी जब प्रभा के साथ हारलेम देखने गई तो कुछ रंगभेद के शिकार काले लोग गोरे लोगों से बदला लेने के लिए उस पर टूट पड़ते हैं तथा प्रभा को धक्का दे

www.ignited.in

देते हैं। प्रभा अपना अनुभव बताती है "एक काले आदमी ने मुझे कैथी से खींचकर अलग किया। तुम जाओ, तुम भारतीय हो। बट वी विल रेप हर।"9

कैथली के पति ब्रेडली मूर साइकियाट्रिस्ट हैं। ब्रेडली उसे बाहर कमाने के लिए जाने की अनुमति नही देता। अधिकांश पुरूष स्त्रियों द्वारा कमाकर लाने को अपने आत्मसम्मान पर चोट जैसा मानते हैं, लेकिन स्त्री को भी अपने आत्मसम्मान के लिए आत्मनिर्भर बनना चाहिए। यही द्वन्द्व कैथी के मन में चलता रहता है। इसलिए वह बच्चा नही चाहती। एक स्थान पर वह प्रभा से कहती भी है "क्या बकवास कर रही हो? वह तो केवल मेरी जिन्दगी के और बीस वर्ष खा जाएगा और उसके बाद कोई नही रहेगा। वह घर छोड़कर पता नही कहां, किस जगह....."।10

कैथी प्रेम पर विष्वास नही करती। उसे अंदर ही अंदर यह प्रतीत होता है कि उसका पति अपनी पहली पत्नी की तरह उसे भी छोड़ देगा। यह द्वन्द्व उसके भीतर इसी प्रकार चलता रहता है। इस उपन्यास में अधिकतर नारी पात्र आत्मनिर्भर होने के लिए भी संघर्ष करते हैं। नारी पात्र हेल्गा अमेरिका में रहने वाली एक यहुदी युवती है तथा नक्सलवाद की शिकार हो जाती है। "मैं....मैं बहुत गहरी हूँ। एक ही आवाज कानों से टकराती है। हम यहूदियों का अपना कोई देश नही है हम अब भी खानाबदोशों की तरह भटक रहे हैं क्योकि मैं सोचती हूँ हर दर्द को आदमी अपनी जमीन पर खड़ा होकर भूल सकता है।"11

यह नारी पात्र भी अपने अस्तित्व को बचाए रखने की कोशिश में मानसिक तनाव से ग्रस्त दिखाई देती है। मानसिक तनाव एक ऐसा अभिशाप है जो एक औरत की हंसती खेलती जिंदगी को ग्रहण लगा देता है। प्रभा ने अपने उपन्यास में इस समस्या को भली भांति दर्शाया है कहीं पर तो उपन्यास की मरील इस कुंठा और तनाव से गुजरती है तो कहीं एलिजा हीन भावना के कारण पति की प्रेयसी से ईर्ष्या करती है। आइलिन भी मन ही मन ईष्या और जलन की भावना रखती है। वह सभी धनवान और सौंदर्यवान औरतों के प्रति ईर्ष्या भाव रखती है। प्रभा खेतान ने नारी जीवन से समस्याओं से उत्पन्न मानसिक वेदना तथा पीड़ा को उचित रूप से उजागर किया है तथा आज के पुरूष प्रधान समाज में स्त्रियों को अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए जिन विषमताओं का सामना करना पड़ता है उनको भली भांति अपने उपन्यास में स्थान दिया है।

निष्कर्षः-

'आओ पेपें घर चलें' उपन्यास के माध्यम से प्रभा जी ने स्त्री संवेदना के स्वर को मुखरित किया है। उन्होने वैश्विक धरातल पर पति पत्नी के संबन्धों की टकराहट, बाहरी व भीतरी मानसिक तनाव, बनावटी जीवन, उच्चवर्गीय जीवन के अंतर्विरोध, उससे उत्पन्न पीड़ा, दर्द तथा अकेलेपन जैसी समस्याओं से उत्पन्न नारी जीवन की पीड़ा को बखूबी अपने उपन्यास में स्थान दिया है।

संदर्भः-

1. सं. राजेन्द्र यादव, प्रभा खेतान, हंस, नवंबर 2008, पृष्ठ 4
2. आओ पेंपे घर चलें, प्रभा खेतान, पृष्ठ 24
3. वही पृष्ठ -70
4. वही पृष्ठ -65
5. वही पृष्ठ -68
6. वही पृष्ठ -54
7. वही पृष्ठ -74
8. वही पृष्ठ -75
9. वही पृष्ठ -139
10. वही पृष्ठ -133
11. वही पृष्ठ -88

Corresponding Author

Babita*

M.A. (Hindi) NET JRF, Hisar

kuldeep786soni@gmail.com

www.ignited.in